दवा छिड़काव में सावधानी बरतें

खेती री बातां

उन सभी कारणों को भूल जाएं कि कोई कार्य नहीं होगा। आपको केवल एक अच्छा कारण खोजना है कि यह कार्य सफल होगा।

वर्ष–18 अंक–2 मासिक पत्रिका आर.एन.आई. – 70296/98 5 फरवरी 2015 वार्षिक शुल्क– 12 रुपये

प्रत्येक जिला मुख्यालय पर होगा कृषि तकनीकी ज्ञान संदर्भ केन्द्र

प्रगतिशील किसानों, पशुपालकों एवं जनजाति क्षेत्र के प्रतिनिधियों के साथ बजट पूर्व बैठक

मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने कहा कि राज्य सरकार किसानों के समग्र विकास के लिए प्रतिबद्ध है। खेती में नई तकनीक का उपयोग हो और इसका किसानों तक प्रचार–प्रसार हो इसके लिए प्रत्येक जिला मुख्यालय पर एक जिला स्तरीय कृषि तकनीकी ज्ञान संदर्भ केन्द्र की स्थापना की जा रही है। इनके माध्यम से किसानों को नवीनतम तकनीक की जानकारी मिल सकेगी।

श्रीमती राजे ने 28 जनवरी को मुख्यमंत्री कार्यालय के कांफ्रेंस हॉल में प्रगतिशील किसानों, पशुपालकों, डेयरी संघ के पदाधिकारियों एवं जनजाति क्षेत्र के प्रतिनिधियों के साथ आयोजित बजट पूर्व बैठक को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि हमने बजट प्रस्तावों को समावेशी बनाने का प्रयास किया है। पहले केवल उद्योग क्षेत्र के प्रतिनिधियों से ही सुझाव लिए जाते थे लेकिन हमने किसानों, पशुपालकों, महिलाओं और युवाओं को भी इससे जोड़ा है ताकि सभी से प्राप्त सुझावों से बेहतर उपलब्धियाँ हासिल की जा सकें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि खेतों की मिट्टी के परीक्षण के लिए व्यापक कार्यक्रम चलाया गया है। पंचायत समिति स्तर पर 55 नई प्रयोगशालाएं स्थापित की जायेंगी। इस प्रकार प्रदेश में कुल 113 मृदा परीक्षण प्रयोगशालाएं काम करने लगेंगी। श्रीमती राजे ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के हाथों शीघ्र ही हम मृदा परीक्षण को लेकर एक बड़ा कार्यक्रम आयोजित करने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार किसानों को ई–गवर्नेंस से जोड़ना चाहती है ताकि उन्हें मौसम के पूर्वानुमान, सभी जिन्सों के बाजार भाव तथा विभिन्न योजनाओं की जानकारी आसानी से प्राप्त हो और वे किसी अन्य पर निर्भर रहने के बजाय स्वयं अपना भविष्य संवार सकें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि फसल विविधी–. करण के तहत किये गए अभिनव प्रयोगों के सार्थक परिणाम आने लगे हैं। बीकानेर में जैतून तेल की रिफायनरी और बस्सी में प्रशिक्षण केन्द्र प्रारम्भ हो गए हैं। उन्होंने कहा कि बीकानेर जिले को जैतून व खजूर का हब बनाने का कार्य शुरु कर दिया गया है। साथ ही जयपुर में जैतून की विश्वस्तरीय नर्सरी की स्थापना की गई है जिसकी उत्पादन क्षमता 20 लाख पौधे प्रति वर्ष है।

श्रीमती राजे ने कहा कि राज्य सरकार उन्नत उद्यानिकी तकनीक के प्रदर्शन के लिए विभिन्न स्थानों पर सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना कर रही है। उन्होंने कहा कि जयपुर, कोटा एवं जैसलमेर में इन केन्द्रों की स्थापना की जा चुकी है और धौलपुर, टोंक एवं झालावाड़ में नये केन्द्र स्थापित किये जा रहे हैं। इन केन्द्रों पर विशेष फसल की नवीनतम तकनीक का प्रदर्शन एवं किसानों को प्रशिक्षण देने का कार्य किया

शेष पृष्ठ 4 पर.....

राज्य को सरसों स्टेट घोषित करवाने के होगें प्रयास

कृषि मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी ने राज्य कृषि प्रबंध संस्थान, दुर्गापुरा, जयपुर में 5 जनवरी को सरसों पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन अवसर पर कहा है कि राज्य को सरसों स्टेट घोषित करवाने के प्रयास किए जायेंगे। उन्होंने कहा कि राज्य को सरसों स्टेट घोषित करवाने का प्रस्ताव मुख्यमंत्री के माध्यम से भारत सरकार को भिजवाया जायेगा।

श्री सैनी ने बताया कि राज्य को सरसों स्टेट घोषित करने पर किसानों को उनकी उपज का सही दाम मिलेगा और प्रसंस्करण व विपणन के क्षेत्र में रोजगार के अवसर सृजित होंगे।

कृषि मंत्री श्री सैनी ने बताया कि राज्य सरसों के उत्पादन में भारत में सर्वोच्च स्थान रखता है। लेकिन हमें इसकी उत्पादकता बढ़ाने पर काम करना होगा। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे सरसों की इस तरह की किस्में विकसित करें, जो उत्पादकता और ऑयल कन्टेंट (तेल की मात्रा) की दृष्टि से अच्छी हों। राजस्थान ऑयल कन्टेंट में राष्ट्रीय औसत से आगे है, लेकिन इसे और सुधारने की आवश्यकता है। साथ ही उन्होंने सरसों की सूखा और पाला रोधी किस्मों को विकसित करने और कीट व रोग प्रबंधन के क्षेत्र में अनुसंधान की आवश्यकता जताई।

राज्य में कृषि व सम्बद्ध क्षेत्र में निवेश करने में निवेशकों ने दिखाई रुचि

वाइब्रेंट गुजरात समिट के दौरान 7 से 13 जनवरी को गुजरात के गांधीनगर में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में निवेशकों ने राज्य में निवेश को लेकर खूब उत्साह दिखाया। निवेशकों ने खासतौर पर जैविक उत्पादों, मसालों, तिलहन और सब्जी के क्षेत्र में निवेश को लेकर चर्चा की। अप्रवासी भारतीय दिवस और वाइब्रेंट गुजरात में भाग लेने आए अप्रवासी भारतीय और स्थानीय व्यापारियों ने राज्य में निवेश की संभावनाओं को लेकर विभागीय अधिकारियों से चर्चा की। राज्य में खजूर और जैतून की खेती के बारे में जानने के लिए निवेशक उत्सुक नज़र आए। गौरतलब है कि राजस्थान पहला राज्य है, जहाँ जैतून की खेती हो रही है। निवेशकों द्वारा जहाँ राज्य में खाद्यान्न प्रसंस्करण के क्षेत्र में राज्य सरकार द्वारा दिए जाने वाली सहायता के बारे में जाना वहीं उन्होंने राज्य के कृषि उत्पादों के निर्यात की संभावनाओं पर भी बात की। राज्य में जिन कृषि उत्पादों का बड़े स्तर पर उत्पादन होता है, उनकी प्रसंस्करण इकाई स्थापित करने को लेकर अधिकारियों से चर्चा की। निवेशकों द्वारा कॉन्टेक्ट फार्मिंग के सम्बंध में भी जानकारी हासिल की गई साथ ही उन्होंने राज्य में भी इस तरह के मेले आयोजित करने की भी बात कही।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में कृषि विभाग की स्टॉल रही आकर्षण का केन्द्र

गुजरात के गांधीनगर में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में कृषि विभाग की प्रदर्शनी आकर्षण का केन्द्र रही। कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन, डेयरी और कृषि प्रसंस्करण के क्षेत्र में राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में जानने के लिए अप्रवासी भारतीयों सहित आगन्तुक भी काफी उत्सुक नजर आए। इस व्यापार मेले के डोम संख्या आठ में कृषि विभाग द्वारा अपनी स्टॉल लगाई गई। विभाग द्वारा कृषि और सम्बद्ध क्षेत्र में निवेश की संभावनाओं, विभाग की उपलब्धियों और योजनाओं को पैम्फलेट, फोल्डर्स, फ्लेक्स, बैनर और एलईडी टीवी के माध्यम से प्रदर्शित किया गया, साथ ही विभागीय साहित्य का निःशुल्क वितरण भी किया गया।

प्रदेश के उद्योग मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह खींवसर एवं गुजरात एग्रो इंडस्ट्रीज कॉरपोरेशन लिमिटेड के अध्यक्ष श्री बाबूभाई जेबालिया ने भी विभाग की स्टॉल का अवलोकन किया। उन्होंने राज्य में कृषि के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों पर खुशी जाहिर की। उप निदेशक श्री खेमराज शर्मा और श्री एन.एल. पारीक ने विभाग द्वारा प्रदर्शनी के सम्बंध में जानकारी दी।

E mail : kheti_ri_batan@yahoo.co.in

इस अंक में....

www.krishi.rajasthan.gov.in

- फरवरी माह के कृषि कार्य
- परख
- दीमक का जैविक नियंत्रण

पृष्ठ 2

- समय पर पौध संरक्षण उपाय..
- अब नहीं होगा मोयला से.....
- राजीव गांधी कृषक साथी योजना

पृष्ठ 3

- कुष्माण्ड कुल की सब्जियों...
- गेहूँ में रोली रोग नियंत्रण
- फसलों को पाले से बचायें
- खेती की नई जानकारी के लिए

पृष्ठ 4

दूरभाष – 0141–5116240, 2227365/354

फरवरी माह के कृषि कार्य

फसलोत्पादन

★**गेहूँ** की फसल में करनाल बंट रोग का प्रकोप दिखाई देने पर बाली आने की अवस्था पर 0.1 प्रतिशत (1 मिलिलीटर प्रति लीटर पानी) की दर से प्रोपीकोनाजोल (टिल्ट) 10 ई.सी. के घोल का छिड़काव करें। छिड़काव 15 दिन बाद दोहरायें।

★**गेहूँ** की फसल में गांठ बनते समय तथा बालियां आने के समय (बुवाई के 70 दिन बाद) व जौ में दूधिया अवस्था पर सिंचाई करें।

★**जायद मूंगफली** हेतु झुमका किस्में जी. जी.–2, आर.जी.–141, टी.ए.जी.–24, टी. ए.जी.–37 ए, डी.एच. 86 किस्मों की 100–120 किलोग्राम गुली प्रति हैक्टर बोयें।

★**जायद मूंग** के लिए आर.एम.जी.–492, पी.डी.एम.–11, एस.एम.एल.–668, पूसा बैसाखी, एस.–8, एस.–9, आर.एम.जी. –344, आर.एम.जी.–268, आई.पी.एम. 02–03, आर.एम.जी.–62 किस्मों का 15–20 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टर बोयें।

बागवानी

★जहाँ सिंचाई की सुविधा हो वहाँ नींबू, अमरुद, अनार, बेर, आंवला आदि के पौधे फरवरी माह में लगाये जा सकते हैं।

★**नींबू** के पौधों के मूलवृन्त तैयार करने हेतु नर्सरी में बीजों की बुवाई करें। मूलवृन्त एक वर्ष के हो जायें तब उन पर कालिकायन करें।

★**शरीफा (सीताफल)** में स्केल कीट वृक्ष एवं टहनियों व फूलों का रस चूसता है। इसके नियंत्रण के लिए मिथाइल पैराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण 50 से 100 ग्राम प्रति पेड़ थाले में 10 से 25 सेंटीमीटर की गहराई पर मिलायें। पेड़ी पर डाइमिथोएट 30 ई.सी. या क्यूनॉलफॉस 25 ई.सी. दवा 1.5 मिलिलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें।

★**आम, अंगूर व बेर** में छाछ्या रोग के नियंत्रण के लिए घुलनशील गंधक 2 ग्राम या केराथियान एल.सी. 1 मिलिलीटर या केलेक्सिन 1 मिलिलीटर दवा का प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।

★**नींबू** में सिट्रस कैंकर के कारण टहनियों, पत्तियों व फलों पर भूरे रंग के मध्य से फटे, ,खुरदरे व कॉर्कनुमा धब्बे बन जाते हैं। इसके नियंत्रण के लिए बोर्डो मिश्रण (4 : 4 : 50) या स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 250 मिलिग्राम व कार्बेन्डेजिम 75 डब्ल्यू. पी. एक ग्राम दवा प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें।

★**आम** के पौधों में फूल आना एवं फल बनना प्रारम्भ हो जाता है। छोटे फलों को गिरने से रोकने के लिए 2, 4–डी नामक दवा 2 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। छिड़काव फल मटर के दाने के बराबर हो जाने पर करें।

सब्जियाँ

★**बैंगन, टमाटर, भिण्डी** में मकड़ी, थ्रिप्स, सफेद व हरा तेला पत्तियों व तने का रस चूसकर पौधों को रोगग्रस्त बनाते हैं। डायमिथोएट 30 ई.सी या मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. या मैलाथियॉन 50 ई.सी. एक मिलिलीटर प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। आवश्यकता पड़ने पर यह छिड़काव 15–20 दिन बाद दोहरायें।

★**ग्रीष्मकालीन मिर्च एवं टमाटर** की नर्सरी तैयार करें। बुवाई पूर्व बीजों को 2 ग्राम कैप्टान प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करें एवं नर्सरी में 8–10 ग्राम कार्बोफ्यूरॉन 3 जी प्रति वर्गमीटर के हिसाब से मिलायें। नर्सरी में बुवाई के 4–5 सप्ताह बाद पौध रोपण योग्य हो जाती है।

★**पिछेती** बोई गई **आलू** की फसल की देखभाल करें। बुवाई के 30–35 दिन बाद 125–150 किलो यूरिया प्रति हैक्टर की दर से मिट्टी चढ़ाते समय देवें।

★**मटर** में छाछ्या रोग का प्रकोप होने पर घुलनशील गंधक 2 ग्राम या कैराथियान एल.सी. 1 मिलिलीटर प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

★**बैंगन एवं टमाटर** की फसल में फल एवं तना छेदक कीट के नियंत्रण हेतु प्रभावित शाखाओं एवं फलों को तोड़कर नष्ट कर देवें तथा फल बनने की अवस्था पर ऐसीफेट 75 एस.पी. दवा 0.5 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार छिड़काव दोहरायें।

पुष्पोत्पादन

★**गुलाब** की फसल में इस समय छाछ्या (पाउडरी मिल्डयू) रोग के प्रकोप की संभावना रहती है। इसके नियंत्रण हेतु डायनोकेप 48 प्रतिशत ई.सी. या ट्राइडेमोर्फ 80 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 1 मिलिलीटर प्रति लीटर पानी के घोल का 10 दिन के अन्तराल में छिड़काव करें।

★**रजनीगंधा** के बल्बों के रोपण से 10–15 दिन पूर्व क्यारियों में प्रति वर्गमीटर 10 किग्रा. गोबर या कम्पोस्ट खाद, 100 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 80–100 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश की बेसल ड्रेसिंग करें।

★**गर्मी के फूलों** जैसे जीनिया, सन –फ्लावर, पोर्चुलाका व कोचिया के बीजों की नर्सरी में बुवाई करें।।

मसाले

★**सौंफ** में दानों का रंग हरे से पीला होने लगे, उन गुच्छों को तोड़ लेना चाहिये तथा गुच्छों को साफ जगह में सुखाना चाहिये। अधिक पैदावार के लिए सौंफ को अधिक पीला नहीं पड़ने देना चाहिये।

★**अदरक** की गांठें लगने के लगभग 9–10 माह पश्चात् जब पत्ते पीले पड़कर सूख जायें तो फसल तैयार हो जाती है। इसकी खुदाई करके गांठें निकाल लेनी चाहिये।

औषधीय व सुगन्धित पौधे

★फरवरी माह में **अश्वगंधा** की फसल को जड़ों सहित उखाड़ लेवें। तत्पश्चात् जड़ों को 7–10 से.मी. लम्बाई के टुकड़ों में काटकर छांयादार स्थान पर सुखाकर जूट के बोरों में भरकर उनका संग्रह कर लेना चाहिये।

परख

जनवरी, 2015 के अंक में प्रकाशित आलेख में से दो प्रश्न पूछे गये थे। सही उत्तर भेजने वाले लॉटरी द्वारा चुने गये दो विजेता कृषकों के नाम हैं–

1.श्री कमलेश कुमार बाँयल
पुत्र श्री महादेव राम बलाई
मु. पो.– भगेगा
वाया–सिरोही, तह. नीमकाथाना
जिला– सीकर (332714)

2.श्री विरमदेव पुष्करणा
पुत्र श्री प्रकाश पुष्करणा
ग्रा.– मदार
तह.– बड़गांव
जिला– उदयपुर (313011)

इस माह के प्रश्न हैं –

प्र.1 मोयला कीट का जैविक नियन्त्रण कैसे किया जा सकता है ?

प्र.2 किसान कॉल सेन्टर के निःशुल्क टेलीफोन नम्बर बताइये?

तो आप भी उठाइये पैन व पोस्ट कार्ड और हमें लिख भेजिये इन दोनों प्रश्नों के सही जवाब –
उप निदेशक, कृषि (सूचना), कमरा नम्बर 118, कृषि आयुक्तालय, पंत कृषि भवन, जयपुर–302005

मुर्गीपालन

★मुर्गी गृह में प्रकाश एवं गर्मी की पर्याप्त व्यवस्था करें।

★मुर्गियों को कृमिनाशक दवा दें।

★मुर्गियों को अतिरिक्त ऊर्जा हेतु दाना दें।

★लिटर को सूखा रखें तथा स्वच्छ पानी सदैव उपलब्ध रखें।

चारा फसलें

★गर्मी में चारे के लिए मक्का, चरी और लोबिया की बुवाई माह के दूसरे पखवाड़े से प्रारम्भ की जा सकती है।

दीमक का जैविक नियंत्रण : एक कारगर उपाय

अनाज वाली फसलों विशेषकर गेहूँ व जौ में दीमक का फरवरी–मार्च में अधिक प्रकोप होता है। खड़ी फसल में सामान्यतया किसान रसायनों का उपयोग करते हैं। यह तरीका महंगा एवं खर्चीला है तथा मृदा को प्रदूषित करता है। जैव नियंत्रण कारकों विशेषकर मित्र फफूंद मेटाराइजियम एनिसोपलाई एवं ब्यूवेरिया बेसियाना का संवर्धन, नीम का तेल, अरण्डी की खली का प्रयोग दीमक नियंत्रण के लिए सतत एवं स्थाई कारक हैं।

मेटाराइजियम एनिसोपलाई मित्र फफूंद:–प्राकृतिक रुप से भूमि में पाई जाने वाली मेटाराइजियम एक मित्र फफूंद है। यह फफूंद कई प्रकार के कीटों में परजीवी की तरह प्रवेश कर उन्हें नष्ट कर देती है। यह भूमिगत कीटों विशेषकर सफेद चींटी यानी दीमक को नियंत्रित करती है।

उपयोग का तरीका:– गेहूँ व जौ में दीमक की रोकथाम हेतु 2.5 से 5 किलो मेटाराइजियम 100 किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट या केंचुआ खाद में मिलाकर 72 घंटे संवर्धन करें जिससे माईसीलियम वृद्धि कर सकें। इसे बुवाई से पूर्व या प्रथम निराई–गुड़ाई के बाद या खड़ी फसल में एक हैक्टर में भुरकाव कर सिंचाई करें।

भूमि में मिलाने पर फफूंद के कोनिडिया (स्पोर्स) कीड़ों की त्वचा पर अंकुरित होकर शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। शरीर में प्रवेश के बाद हानिकारक जहरीला पदार्थ बनाते हैं जिससे धीरे–धीरे कीट की मृत्यु हो जाती है एवं कीट वंश वृद्धि की स्थिति में नहीं रहता है। मित्र फफूंद मेटाराइजियम एक दीर्घ अवधि तक असरदार, लाभकारी, वातावरण एवं भूमि प्रदूषण रहित एवं मनुष्य एवं पशुओं के लिए सुरक्षित है। इसे ठण्डे हवादार स्थान पर रखें। निर्माण तिथि से 120 दिन के अन्दर उपयोग करें। मित्र फफूंद के उपचार से पूर्व या बाद में रसायनों का उपयोग नहीं करें।

ब्यूवेरिया बेसियाना मित्र फफूंद:–

मेटाराइजियम की तरह ब्यूवेरिया भी दीमक का नियंत्रण करता है। यह गेहूँ, जौ व फलदार पौधों में उपयोग किया जाता है।

उपयोग का तरीका:– 2.5 किलो ब्यूवेरिया को 100 किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट या केंचुआ खाद में मिलाकर 72 घंटे (नमी की अवस्था) में ढ़क कर रखें ताकि माइसीलियम वृद्धि कर सकें। तैयार संवर्धन का खड़ी फसल में भुरकाव कर सिंचाई करें। भूमि में मिलाने या छिड़काव के उपरान्त फफूंद का कोनिडियम शत्रु कीटों के शरीर की त्वचा में चिपक कर अंकुरित हो जाता है।

फफूंद हाइफा में से रस स्त्रावित करती है जिससे शत्रु कीटों के शरीर की त्वचा यानी हार्ड क्यूटिकल घुल कर त्वचा में प्रवेश कर कीटों की वृद्धि रोक देता है। फफूंद शरीर में ब्यूवेरिया नामक जहरीला स्त्राव बनाता है जो कीट की प्रतिरोधक क्षमता को नष्ट करता है जिससे कीट मर जाता है। फलदार पौधों में 50–100 ग्राम फफूंद संवर्धन प्रति पौधे को उम्र के हिसाब से देवें।

उपलब्धता:–मेटाराइजियम एवं ब्यूवेरिया पर अनुसंधान राज्य के ग्राह्य परीक्षण केन्द्रों पर स्थित क्षेत्रीय प्रयोगशालाओं ए.टी.सी. रामपुरा (जोधपुर), सुमेरपुर (पाली), तबीजी (अजमेर), लूणकरणसर (बीकानेर) श्रीकरणपुर (गंगानगर), छत्रपुरा (बूंदी), मलिकपुर (भरतपुर), चितौड़गढ़ तथा बासवाड़ा में किया जा रहा है। निजी कम्पनियों तथा राज्य की आई.पी.एम. प्रयोगशालाओं में यह उपलब्ध है।

अरण्डी की खली का प्रयोग:– दीमक प्रभावित क्षेत्रों में 500 किलो अरण्डी की खली प्रति हैक्टर की दर से अन्तिम जुताई के समय भूमि में मिलायें। अरण्डी की खली खेत में सीधे डालने पर देर से विघटित होती है अतः खेत में डालने से आधा घंटे पूर्व पानी से गीला कर लें तथा पाउडर बनाकर खेत में डालें।

नीम का तेल:– खड़ी फसल में दीमक नियंत्रण के लिए 4 लीटर नीम का तेल प्रति हैक्टर की दर से सिंचाई के पानी के साथ देवें या 50–60 किलो बजरी में मिलाकर भुरकाव कर सिंचाई करें।

दीमक के प्रभावी एवं कारगर नियंत्रण के लिए मित्र फफूंद के उपयोग के अलावा फसल चक्र अपनायें, गर्मी की गहरी जुताई करें। दीमक की कॉलोनियों (घर) को नष्ट करें। फसल बोने से पूर्व बीजोपचार अवश्य करें। फसल में सिंचाई निश्चित अन्तराल पर करते रहें।

समय पर पौध संरक्षण उपाय अपनाकर लाभकारी बनायें रबी प्याज की खेती

प्याज की फसल पर विभिन्न प्रकार के कीट एवं रोगों का प्रकोप होता है जो फसल की उपज, गुणवत्ता एवं संग्रहण अवधि को प्रभावित करते हैं। प्याज की फसल में लगने वाली बीमारियाँ एवं कीट तथा उनकी रोकथाम के उपाय नीचे सुझाये जा रहे हैं :–

कीट/ व्याधि	लक्षण	नियंत्रण
पर्णजीवी व थ्रिप्स	यह कीट पत्तियों को विभिन्न प्रकार से काटते हैं। रस चूसकर व अन्दर कन्द में रहकर सड़न पैदा करते हैं। तापमान वृद्धि के साथ ही फरवरी से मई माह तक इनका प्रकोप अधिक रहता है।	नीम गोल्ड 1500 पी.पी.एम (3 मिलिलीटर प्रति लीटर पानी) की दर से छिड़काव करें। थ्रिप्स का ज्यादा प्रकोप होने पर मैलाथियॉन 50 ई.सी. दवा 1 मिलिलीटर प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार छिड़काव दोहरायें।
बैंगनी धब्बा रोग या अंगमारी	यह फफूंद जनित रोग है। फरवरी से अप्रैल माह तक इसका ज्यादा प्रकोप होता है। रोग से प्रभावित भाग पर छोटे सफेद रंग के धंसे हुए धब्बे बनते हैं। उग्र अवस्था में ये धब्बे गुलाबी व बैंगनी रंग में बदलकर बड़े होकर पत्तियों व तने को झुलसे हुए लक्षण के साथ नष्ट कर देते हैं।	थाइरम, मैन्कोजेब अथवा बाविस्टीन दवा 2 ग्राम प्रति किलो की दर से बीज को उपचारित करके ही नर्सरी में बुवाई करें। मैन्कोजेब 0.2 प्रतिशत (2 मिलिलीटर प्रति लीटर पानी) का छिड़काव बीमारी के लक्षण दिखाई देते ही शुरु करें व आवश्यकतानुसार 10 दिन के अन्तराल पर इस छिड़काव को दोहरायें।
जड़ विगलन या गुलाबी जड़गलन रोग	इस रोग का संक्रमण शल्क कन्दों पर धब्बों द्वारा अथवा बाहर त्वचा व जड़ों के गलन से शुरु होता है। उग्र अवस्था में पत्तियाँ पीली पड़कर सूख जाती हैं जड़ें गुलाबी होकर सड़ जाती हैं। यह सड़न खेत और भण्डारण या दोनों जगह हो सकती है।	कन्द उपचारः– वीटावैक्स या बाविष्टीन या मैन्कोजेब 0.2 प्रतिशत (2 मिलिलीटर प्रति लीटर पानी) के घोल में 15 मिनट तक कन्दों को डुबाने के बाद ही बुवाई करें। खड़ी फसलः– बीमारी के लक्षण दिखाई देने पर कॉपर आक्सीक्लोरोइड 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 3 ग्राम प्रति लीटर की दर से खेत में छिड़काव कर हल्की सिंचाई करें।
विषाणु रोग	इस रोग को फैलाने में कीटों की प्रमुख भूमिका है। इस रोग में पत्तियों में सिकुड़न व पीलापन तथा पौधे का आकार कम व गुच्छेदार हो जाता है। पत्तियों के ऊपर धारियों में पीलापन आ जाता है।	डाइमिथोएट 30 ई.सी. दवा 0.1 प्रतिशत (1 मिलिलीटर दवा प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें व आवश्यकतानुसार छिड़काव दोहरायें।
भण्डारण कन्द सड़न	आर्द्रता की अधिकता, कन्दों में अधिक नमी व अपूर्ण परिपक्वता और कन्दों को बन्द जगह में रखने पर कई प्रकार के कीट व फफूंद से इनमें सड़न पैदा हो जाती है।	बीज बनाने के लिए कन्दों को भण्डारित करने से पहले थाइरम अथवा कैप्टान 0.2 प्रतिशत के घोल में 15 मिनट डुबोकर व सुखाकर रखें। भण्डारण हवादार, सूखी व ठंडी जगह में करें। सड़े कन्दों को अलग करके निकालते रहें। छोटे व बड़े कन्दों का भण्डारण अलग–अलग करें।

प्याज में बोल्टिंग, कन्द फटन और जुड़वाँ कन्द की समस्याएँ

जब प्याज की फसल में रोपाई के बाद पौधों पर असमय फूल आ जाते हैं तथा प्याज की सामान्य बढ़वार रुक जाती है तो उनमें अचानक डण्ठल विकसित हो जाते हैं, कन्दों की बढ़वार रुक जाती है, कन्द छोटे व नालीदार बन जाते हैं, इसे नरड़ा या अरड़ा (बोल्टिंग) कहते हैं। इसमें अधपके बीज हो जाते हैं। इसी प्रकार प्याज में एक दूसरी समस्या का भी सामना करना पड़ता है। जिसके अन्तर्गत उत्पादित एकसार कन्द के स्थान पर एक ही कन्द में दो जुड़वाँ कन्द के भाग बन जाते हैं। इसमें कन्द फटने की समस्या भी आ जाती है। ऐसे प्याज जल्दी ही खराब होने लगते हैं। बाजार में इनका मूल्य भी कम मिलता है।

निराकरण हेतु उपायः–

- सन्तुलित एवं सही मात्रा में सही समय पर उर्वरकों का उपयोग करें।
- सही उम्र की पौध (7–8 सप्ताह) की सही समय पर तथा उचित दूरी पर (15 X 10 से.मी.) पर रोपाई करें।
- सही समय आने पर ही बुवाई करें। रबी मौसम के लिए पौध रोपाई दिसम्बर के प्रथम सप्ताह से अन्तिम सप्ताह के बीच कर देनी चाहिये।
- खेत में पर्याप्त नमी बनाये रखें इसके लिए समय पर सिंचाई करना आवश्यक है। सिंचाई की संख्या जलवायु एवं भूमि की किस्म पर निर्भर करती है। तापमान अधिक होने पर सिंचाई जल्दी–जल्दी की जानी चाहिये।
- अपने क्षेत्र के लिए उपयुक्त एवं अनुकूल प्याज की सिफारिश की गई उन्नत किस्म ही काम में लेनी चाहिये।

अब नहीं होगा मोयला से फसलों को नुकसान

मोयला (चेपा) कीट सरसों कुल की फसलों, जौ, मैथी, धनियाँ, सौफ, जीरा सहित प्रायः सभी फसलों का रस चूस कर हानि पहूँचाते हैं। जब आकाश में बादल छाये रहते हैं व तापमान 20 डिग्री सेल्सियस से कम

हो जाता है तो मोयला बहुत तेजी से बढ़ता है। प्रकोप वाले पौधों पर फलियाँ कम लगती हैं, दाने छोटे रह जाते हैं व फसल को भारी नुकसान होता है।

★मोयला के समन्वित कीट नियंत्रण के लिए कीट के आर्थिक हानि स्तर (10–15 प्रतिशत पौधों पर 25 मोयला प्रति 10 सेन्टीमीटर तने की ऊपरी शाखा) में पाये जाने पर रोकथाम के लिए मिथाइल पैराथियॉन 2 प्रतिशत या कार्बेरिल 5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो प्रति हैक्टर की दर से भुरकाव करें। पानी की सुविधा वाले क्षेत्रों में थायोमिथोक्साम 25 डब्ल्यू.जी. या एसिटामप्रिड 20 प्रतिशत 100 ग्राम दवा या मैलाथियॉन 50 ई.सी. या डायमिथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर दवा प्रति हैक्टर की दर से 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

★**जैविक नियंत्रणः–** फसल में कीट आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाये जाने पर 2 प्रतिशत नीम के तेल को 0.1 प्रतिशत तरल साबुन के घोल (20 मिलिलीटर नीम का तेल + 1 मिलिलीटर तरल साबुन) में मिलाकर छिड़काव करें।

राजीव गांधी कृषक साथी योजना

"राजीव गांधी कृषक साथी योजना" अन्तर्गत राज्य के कृषकों/खेतीहर मजदूरों द्वारा कृषि कार्य करते समय अथवा मण्डी प्रांगण में विपणन कार्य करते समय एवं मण्डी तक विक्रय करने हेतु जाते अथवा लौटते समय दुर्घटना में मृत्यु या अंग–भंग होने पर "राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड" द्वारा कृषि उपज मण्डी समितियों के जरिये सहायता प्रदान की जाती है।

योजना का लाभ निम्न परिस्थितियों में देय हैः–

★कृषि कार्य में कृषि यंत्रों का उपयोग करते हुए (जिसमें खेती से संबंधित सिंचाई कार्य भी शामिल है)।

★सिंचाई कार्य हेतु कुआं खोदते समय, ट्यूबवैल स्थापित करते समय एवं ट्यूबवैल संचालित करते समय बिजली करंट लगने तथा खेत में गुजरने वाली विद्युत लाईन के क्षतिग्रस्त होने से मृत्यु या अंग–भंग होने पर।

★कृषकों द्वारा खेतों में फसलों, फल व सब्जियों पर रासायनिक दवाईयों आदि का छिड़काव करते समय दुर्घटना में मृत्यु होने पर।

★मुख्य मण्डी यार्ड व राज्य सरकार द्वारा समय–समय पर घोषित क्रय केन्द्रों पर कृषि यंत्रों का उपयोग करते समय दुर्घटना में मृत्यु या अंग–भंग होने पर।

★मण्डी में बोरियों की धांग लगाते समय मृत्यु या अंग–भंग होने पर।

★मण्डी प्रांगण में या घर से खेत में आते या जाते समय ट्रेक्टर–ट्रोली, ऊँट–लड्ढ़ा, बैल–गाड़ी, भैंसा–गाड़ी आदि उलट जाने पर दुर्घटना में काश्तकार की मृत्यु या अंग–भंग होने पर।

★ पल्लेदार/ हमाल/ मजदूर की मण्डी प्रांगण में कृषि विपणन कार्य करते समय दुर्घटना में फ्रैक्चर होने एवं मृत्यु या अंग–भंग होने पर।

★अपने अथवा किराये के साधन जिसमें काश्तकार स्वयं हो, मण्डी में कृषि उपज लाते या लौटते समय (अगले दिन तक) रास्ते में हुई दुर्घटना में मृत्यु या अंग–भंग होने पर।

★राज्य में कुट्टी काटने की मशीन अथवा कृषि संयत्रों से कृषक/ मजदूर, पुरुषों, महिलाओं के केश (बाल) मशीन में आने से हुई दुर्घटना (डी–स्केल्पिंग) पर।

★खेत पर कार्य करते हुए सांप/ ऊँट या जहरीले जानवर के काटने पर मृत्यु या अंग–भंग होने पर।

★कृषि कार्य करते हुए आकाशीय बिजली गिरने से मृत्यु या अंग–भंग होने पर।

★कृषि/कृषि विपणन कार्य करते समय रीढ़ की हड्डी टूट जाने पर दो अंगों की क्षति के समान मानते हुए मुआवजा राशि देय है।

★कृषि/कृषि विपणन कार्य करते समय सिर में चोट लगने से कोमा में जाने पर इसे दो अंगों के स्थायी रुप से अंग–भंग होने के समान क्षति मानते हुए सहायता राशि देय होगी।

★कृषि सुरक्षा, पशु चराई हेतु पेड़ों की छंगाई, कृषि की रखवाली करते हुए दुर्घटना घटित होने पर।

★खेत में कृषि कार्य करते समय खेत में निर्मित डिग्गी/ टांके में डूबने से मृत्यु होने पर भी इस योजना के तहत लाभ देय होगा।

इस योजना में निम्न प्रकार सहायता देय हैः–

क्र. सं.	सहायता राशि हेतु परिस्थिति	देय सहायता (राशि रू. में)
1.	मृत्यु होने पर आश्रित को	2,00,000/–
2.	दो अंग, जैसे दोनों हाथ, दोनों पांव, दोनों आँख, कोई एक–एक अंग अलग से कटने पर	50,000/–
3.	रीढ़ की हड्डी टूटने, सिर पर चोट से कोमा में जाने पर	50,000/–
4.	पुरुष अथवा महिला के सिर के केश (बालों) की डी–स्केल्पिंग होने पर	40,000/–
5.	पुरुष अथवा महिला के सिर के केश (बालों) की आंशिक (छोटे भाग की) डी–स्केल्पिंग होने पर	25,000/–
6.	एक अंग जैसे एक हाथ, पैर, आँख, पंजा, बांह आदि के अंग–भंग होने पर	25,000/–
7.	चार अंगुली कट जाने पर (पूर्ण रुप से या हिस्से में)	20,000/–
8.	तीन अंगुली कट जाने पर	15,000/–
9.	दो अंगुली कट जाने पर	10,000/–
10.	एक अंगुली कट जाने पर	5,000/–
11.	मण्डी प्रांगण में कार्यरत हमाल/ पल्लेदार/ मजदूर को मण्डी प्रांगण में कृषि/ विपणन कार्य करते समय दुर्घटना में फ्रैक्चर होने पर	5,000/–

योजना संबंधित अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:–

राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड, पंत कृषि भवन, जयपुर, दूरभाष नं. : 0141–2227336, 2227914

फैक्स नं. : 0141–2227096, वेबसाइटःwww.rsamb.rajasthan.gov.in

ऐसे मंगवायें "खेती री बातां"
घर बैठे वर्षभर खेती री बातां अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें या आहरण वितरण अधिकारी, कृषि आयुक्तालय कमरा नं. 250, पंत कृषि भवन, जयपुर के नाम 12/– रुपये का मनीआर्डर भेजें। स्वयं का साफ–साफ डाक का पूरा पता, पिन कोड नंबर व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

डाक पं.सं. JaipurCity/409/2015-17
आरएनआई – 70296/98

प्रेषक–
उप निदेशक कृषि (सूचना)
118, पंत कृषि भवन,
जयपुर–302005

प्रेषिति–

कुष्माण्ड कुल की सब्जियों की कार्यमाला

फसल	किस्में	बुवाई का समय	बीज दर (किग्रा.)	दूरी (मीटर) (कतार x पौधा)	उपज प्रति (क्वि./है.)	उर्वरक प्रबन्धन	बीजोपचार एवं कीट-रोग प्रबन्धन
लौकी	पूसा समर प्रोलिफिक लोंग, पूसा समर प्रोलिफिक राउण्ड पूसा मंजरी, पूसा मेघदूत पूसा नवीन	फरवरी–मार्च, जून–जुलाई	4–5	2.5–3 x 0.75	150–250	गोबर की खाद 200–250 क्वि./है. नत्रजन–80–100 किलो/है. फास्फोरस 40 किलो/है. पोटाश 40 किलो/है. फॉस्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय तथा नत्रजन की 1/3 मात्रा बुवाई के समय (66 किलो यूरिया), 1/3 नत्रजन बुवाई के 25–30 दिन बाद (66 किलो यूरिया) व शेष 1/3 नत्रजन फूल आने पर (66 किलो यूरिया) (सभी सब्जियों में समान मात्रा)	• 2 ग्राम कार्बेन्डेजिम प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें। • **लालभृंग एवं फलमक्खी**–कार्बेरिल 5% चूर्ण 20 किग्रा/है. या एसीफेट 75 एस.पी. 0.5 ग्राम/लीटर पानी। • **बरुथी**–इथियोन 50 ई.सी 0.6 मिली/लीटर पानी। • **तुलासिता, झुलसा, एन्थेक्नोज रोग**–मेन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी। • **विषाणु जनित रोग**–डायमिथोएट 30 ई.सी. 1 मिली/लीटर पानी। • **छाछ्या रोग**–केराथियॉन एल.सी. 1 मिलिलीटर प्रति लीटर पानी।
कद्दू (काशीफल)	पूसा विश्वास, पूसा अलंकार, अर्का चन्दन	फरवरी–मार्च, जून–जुलाई	4–5	3–4 x 1.25	250–400		
तरबूज	शुगरबेबी, दुर्गापुरा मीठा, दुर्गापुरा केसर अर्काज्योति, मधु	फरवरी–मार्च, जून–जुलाई	4–4.5	2.5 x 1.0	250–500		
खरबूजा	दुर्गापुरा मधु, पंजाब सुनहरी, पंजाब हाईब्रिड, अर्काजीत, हरा मधु	फरवरी–मार्च	1.5–2	2.0 x 0.60	150–200		
खीरा	बालम खीरा, पाइनसेट,पूसा संयोग	फरवरी–मार्च, जून–जुलाई	2–2.5	1.5 x 0.50 2.5 x 0.50	100–125		
करेला	कोयम्बटूर लोंग, पूसा दो मौसमी, अर्का हरित, ग्रीन लोंग	फरवरी–मार्च, जून–जुलाई	4–5	1.25 x 0.50	75–100		
टिण्डा	बीकानेरी ग्रीन, दिल पसंद, टिण्डा लुधियाना, अर्को टिण्डा	फरवरी–मार्च, जून–जुलाई	4–5	1.5 x 0.75 2.0 x 0.75	80–100		
ककड़ी	लखनऊ अगेती, अर्का शीतल	फरवरी–मार्च	2	1.5 x 0.6	60–80		
चिकनी तुरई	पूसा चिकनी, सलेक्शन–99	फरवरी–मार्च, जून–जुलाई	4–5	1.5 x 0.6 2.5 x 0.75	100–125		
धारीदार तुरई	पूसा नसदार	फरवरी–मार्च, जून–जुलाई	4–5	1.5 x 0.6 2.5 x 0.75	100–125		

पृष्ठ 1 का शेष (प्रत्येक जिला)....

जायेगा। बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव, कृषि, श्री अशोक सम्पतराम, प्रमुख शासन सचिव, वित्त, श्री पी.एस. मेहरा सहित विभिन्न विभागों के प्रमुख शासन सचिव एवं शासन सचिव उपस्थित थे।

सूचना

"खेती री बातां" अखबार प्रत्येक माह की 5 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। इसमें उन सभी पाठकों को सम्मिलित कर लिया जाता है जिनका सदस्यता शुल्क गत माह की 25 तारीख तक प्राप्त हो जाता है। इसके बाद प्राप्त होने वाले सदस्यों को अगले माह अखबार भेजा जाता है।

सदस्यता शुल्क समय पर जमा कराने के उपरान्त भी यदि आपको यह अखबार माह की 10–11 तारीख तक नहीं मिलता है, तो आप अपने पोस्ट ऑफिस में सम्पर्क करें।

जिन पाठकों की "खेती री बातां" अखबार की सदस्यता अवधि समाप्त हो चुकी है, वह आज ही पुनः अपना पंजीकरण करवायें।

"खेती री बातां" अखबार से संबंधित आपके कोई सुझाव हों या आपकी कोई नवाचारी सफलता की कहानी / आलेख हो तो हमें लिख भेजें:–

सम्पादक, कमरा नम्बर 180, पंत कृषि भवन, जयपुर–302005
email:- kheti_ri_batan@yahoo.co.in

गेहूँ में रोली रोग नियंत्रण

गेहूँ की फसल में अन्य रोगों की तुलना में रोली रोग से हानि अधिक होती है। गेहूँ में 3 प्रकार के रोली रोग लगते हैं–

1. पीली रोली रोग,
2. भूरी रोली रोग,
3. काली रोली रोग

राजस्थान एवं देश के सभी प्रमुख गेहूँ उत्पादन प्रदेशों में भूरी एवं पीली रोली रोग से अधिक क्षति होती है।

यह तीन विभिन्न कवकों द्वारा उत्पन्न होती है एवं हवा के माध्यम से फैलती है।

पीली रोली रोग का प्रकोप ठण्ड में अधिक होता है। जनवरी से फरवरी के मध्य जब तापक्रम 2–15 डिग्री सेल्सियस के मध्य होता है, तब इस रोग के लिये अनुकूल होता है।

भूरी रोली रोग के लिए 10–30 डिग्री सेल्सियस तापक्रम अनुकूल होता है, अतः फरवरी से मार्च माह के मध्य इसका प्रकोप अधिक होता है, जिससे फसल को अत्यधिक नुकसान पहूँचता है।

नियंत्रण:–

*रोग के नियंत्रण का सर्वोत्तम उपाय रोली रोधक किस्मों का उपयोग करना है।

*नाइट्रोजन प्रधान उर्वरकों के अत्यधिक इस्तेमाल से रोली रोग का प्रकोप बढ़ता है। अतः संतुलित मात्रा में उर्वरकों का उपयोग करें।

*आवश्यकता से अधिक सिंचाई करने पर भी रोग का प्रकोप बढ़ता है, अतः उचित मात्रा में सिंचाई करें।

*जिन स्थानों पर रोली रोधक किस्मों का उपयोग नहीं किया गया, वहाँ पर सुरक्षात्मक उपाय के रुप में 25 किलो गन्धक का चूर्ण का प्रति हैक्टर की दर से 15 दिन के अन्तराल पर 2–3 बार सुबह या शाम के समय भुरकाव करें अथवा प्रति हैक्टर मैन्कोजेब 2 किलो या प्रोपीकोनेजॉल 25 ई.सी. 1 मिलिलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

फार्म–4
(नियम 8 देखिये)
खेती री बातां

1.प्रकाशन का स्थान	पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर
2.प्रकाशन अवधि	मासिक
3.मुद्रक का नाम	खेमराज शर्मा
क्या भारत के नागरिक हैं	हां
पता	उप निदेशक, कृषि (सूचना) कृषि विभाग, पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर
4.प्रकाशक का नाम	खेमराज शर्मा
क्या भारत के नागरिक हैं	हां
पता	उप निदेशक, कृषि (सूचना) कृषि विभाग, पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर
5.सम्पादक का नाम	डॉ. पूनम चौधरी
क्या भारत के नागरिक हैं	हां
पता	कृषि अधिकारी (सूचना) कृषि विभाग, पंत कृषि भवन, जयपुर।
6.उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पुंजी के एक प्रतिशत के साझेदार या हिस्सेदार हों।	कृषि विभाग, पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर।

मैं खेमराज शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

खेमराज शर्मा

फसलों को पाले से बचायें

फसलों को पाले से बचाने के लिए निम्न उपाय अपनायें:–

*सिंचाई करें।

*मध्य रात्रि में उत्तरी–पश्चिमी मेढ़ पर कूड़ा–कचरा जलाकर धुँआ करें।

*एक मिलिलीटर व्यापारिक गंधक के तेजाब को एक लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। अथवा आधा ग्राम थायोयूरिया या 1 मिलिलीटर डाईमिथाइल सल्फो ऑक्साइड (DMSO) प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

*पौधशाला/ छोटे फल वृक्षों की उत्तरी–पश्चिमी दिशा में हवारोधी टाटी बांधें।

खेती की नई जानकारी के लिए....

बात करें

किसान कॉल सेंटर
निःशुल्क टेलीफोन
1800 180 1551 पर
(प्रातः 6 से रात्रि 10 बजे तक)

देखें

जयपुर दूरदर्शन पर
खेती बाड़ी › बुधवार सायं 7.30 बजे
कृषि दर्शन › सोमवार से शुक्रवार सायं 6.30 बजे

सुनें

"खेती री बातां" आकाशवाणी कार्यक्रम
आकाशवाणी के सभी केन्द्रों से प्रतिदिन सायं 7.45 से 8.15 तक

पढ़ें

"खेती री बातां" मासिक अखबार
डाक से मंगवाने के लिए मात्र 12 रुपये वार्षिक शुल्क निकटतम कृषि कार्यालय में जमा करवायें

मिलें

नजदीकी कृषि कार्यालय या जिले के कृषि विज्ञान केन्द्र में

लॉग ऑन करें

www.krishi.rajasthan.gov.in
(विभागीय वेबसाइट)
www.farmer.gov.in
(संदेश व अन्य जानकारी)

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक उप निदेशक, कृषि (सूचना), कृषि विभाग, राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय, जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशक – खेमराज शर्मा
सम्पादक – डॉ. पूनम चौधरी
परामर्श – जे.पी. यादव
डिजाइनर – आर. मैसी